मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना
(उ.क्षे.), भोपाल
एक परिचय

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

चान्दला मन्दिर (कच्छपघात कालीन), कदवाहा
जिला - अशोक नगर (म.प्र.)

मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल
एक परिचय

प्रस्तावना :

मन्दिरों के स्थापत्यीय सर्वेक्षण के उद्देश्य से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक द्वारा एक गौरवपूर्ण विचार परिकल्पित किया गया, जिसके अन्तर्गत पृथक सर्वेक्षण परियोजनाओं का गठन किया गया तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में दो मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना कार्यालय खोले गये। फलस्वरूप उत्तरी क्षेत्र हेतु भोपाल में तथा दक्षिणी क्षेत्र हेतु चेन्नई में मुख्यालय स्थापित हुए। इसके अतिरिक्त भारत में अन्य स्मारकीय विरासतों के अध्ययन के लिये बिल्डिंग सर्वे प्रोजेक्ट का भी गठन किया गया, जिसका मुख्यालय दिल्ली में स्थित है। तद्नुसार मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना कार्यालय प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारतवर्ष में विभिन्न मन्दिरों के प्रलेखन व सर्वेक्षण के उद्देश्य से परियोजना (प्रोजेक्ट) बनाता है। जिसकी संस्तुति महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा की जाती है। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अन्वेषण संस्थानों से परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर नवीन शोध जानकारियों का आदान-प्रदान करना भी मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना का उद्देश्य रहा है।

सन् 1955 में अपने गठन के समय से ही मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल उत्तरी क्षेत्र के मन्दिरों के गहन अध्ययन में तत्पर रहा है तथा अपने अन्वेषण कार्यों व मन्दिरों के अध्ययन को विभिन्न ज्ञानवर्द्धक लेखों, विवरणिकाओं अनुसंधानिक लेखों के माध्यम से सम्पूर्ण देश के सुधी विद्वानों को लाभान्वित करता रहा है। इसके साथ ही पिछले कुछ वर्षों से इस कार्य में विभाग द्वारा प्रकाशित कलश पत्रिका भी इस कार्य में महती भूमिका निभा रही है।

मन्दिरों के अध्ययन की इस कड़ी में श्री कृष्ण देव, श्री विजयकान्त मिश्रा, श्री एम.डी. खरे, श्रीमती दवेला मित्रा, श्री आर.डी. त्रिवेदी, डॉ. बी.एल. नागार्च, डॉ. पी.के. त्रिवेदी, डॉ. नारायण व्यास तथा अन्य विद्वानों ने असाधारण प्रयास किया तथा विभिन्न मन्दिरों के विस्तृत प्रलेख तैयार किये। स्थापत्य कला के विद्यार्थी भी निश्चित रूप से उपरोक्त विद्वानों द्वारा लिखी गई विभिन्न पुस्तकों, प्रलेखों आदि से समय-समय पर लाभान्वित होते रहे हैं।

मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.) भोपाल में पदस्थ अधीक्षण पुरातत्वविद् की सूची

क्रमांक	नाम	वर्ष (कब से कब तक)
1.	श्री कृष्ण देव	07.12.1955 से 31.01.1962
2.	श्री विजयकान्त मिश्रा	01.02.1962 से 16.04.1963
3.	श्री एम.डी. खरे	17.04.1963 से 01.08.1963
4.	श्रीमती देवला मित्रा	02.08.1963 से 31.05.1966
5.	श्री सुनील राय	01.06.1966से 09.07.1968
6.	श्री एम.डी. खरे	10.07.1968से 19.06.1977
7.	श्री आर.डी. त्रिवेदी	20.06.1977 से 06.07.1984
8.	डॉ. बी.एल. नागार्च	07.07.1984 से 29.12.1993
9.	डॉ. पी.के. त्रिवेदी	30.12.1993 से 15.04.1998
10.	श्री के.के. राममूर्ति	16.04.1998से 11.07.2001
11.	डॉ. डी. भेंगरा	12.07.2001 से 09.09.2004
12.	डॉ. पी.के. मिश्रा	10.09.2004 से 20.07.2006
13.	श्री के.के. मोहम्मद	21.07.2006से 02.08.2007
14.	डॉ. नारायण व्यास	03.08.2007 से 31.01.2009
15.	डॉ. एस.वी. वैंकटेशैय्या	01.02.2009 से 15.07.2009
16.	डॉ. के. लुर्दूसामी	16.07.2009 से अब तक

भा.पु.स. की 150वीं वर्षगाँठ के अवसर पर मं.स.प. (उ.क्षे.) भोपाल द्वारा चन्देरी में आयोजित समारोह में पूर्व अधिकारियों का सम्मान

महत्वपूर्ण परियोजनाऐं

मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल की गौरवशाली शुरुआत भारतीय मन्दिर स्थापत्य कला के मर्मज्ञ श्री कृष्णदेव द्वारा इसे प्रथम अधीक्षण पुरातत्वविद् के रूप में की गई, जिन्होंने खजुराहो के चन्देल कालीन मन्दिरों का विस्तृत अध्ययन कर डाला। अपने कार्यकाल में उन्होंने मध्यप्रदेश में स्थित भोजपुर, भिलसा, ग्यारसपुर, बढ़ोह, पठारी, उदयपुर, सरवाया, कदवाहा, अमरोली और ग्वालियर के मन्दिरों का अध्ययन किया। सन् 1969 में उन्होंने ***'उत्तरी भारत के मन्दिर'*** नामक एक पुस्तक की रचना की, जिसको नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में उन्होंने नागर शैली के मन्दिरों के छाया-चित्रों के साथ बहुत ही सार गर्भित रूप में प्रकाश डाला है। इस पुस्तक में कुल दस अध्याय हैं, जिनमें गुप्तयुगीन मन्दिरों (400-700 ई.), प्रारम्भिक चालुक्य मन्दिरों (500-750), उत्तर चालुक्य मन्दिरों, प्रतिहार कालीन मन्दिरों, राजस्थान के मन्दिरों, गुजरात के मन्दिरों (सोलंकी), कच्छपघात कालीन मन्दिरों, कलचुरि कालीन, चन्देलकालीन तथा उड़ीसा के मन्दिरों का व्यापक वर्णन किया गया है।

खजुराहो के मन्दिर

इसके अतिरिक्त प्रथम बार खजुराहो के मन्दिरों को उनके द्वारा वर्गीकृत किया गया। परिणाम स्वरूप उन्होंने ***'खजुराहो के मन्दिर'*** नामक एक अन्य पुस्तक का लेखन किया जिसको 1990 में महानिदेशक, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा ***'मन्दिरों का पुरातत्वीय सर्वेक्षण'*** श्रृंखला 5 के अन्तर्गत दो भागों में प्रकाशित किया गया।

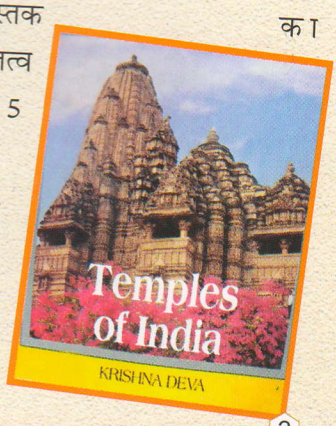

श्री कृष्ण देव द्वारा लिखी गई एक अन्य पुस्तक ***'भारत के मन्दिर'*** (Temples of India) का भी उल्लेख कर देना उचित प्रतीत होता है। जोकि दो भागों में सन् 1995 में प्रकाशित की गई। यह पुस्तक मन्दिर स्थापत्य

बटेसर, जिला-मुरेना (म.प्र.) स्थित मंदिर समूह

कला के शोधार्थियों के लिये एक मील का पत्थर साबित हुई है।

सन् 1963 से 1977 तक मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल में कई विद्वानों ने अधीक्षण पुरातत्वविद् के रूप में कार्य किया। श्री एम.डी. खरे ने अशोक नगर के थोबन के मन्दिरों का अध्ययन किया जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न वैष्णव व शैव मन्दिरों को प्रकाश में लाया गया (IAR-1969-70, 72-73)। इसके अतिरिक्त उन्होंने बेसनगर (विदिशा), नागरी, बैराट, मथुरा, श्रावस्ती, कौशाम्बी, नागार्जुनकोन्डा तथा तक्षशिला के चौथी शताब्दी ई.पू. से लेकर तृतीय शताब्दी ई. के मध्य निर्मित मन्दिरों का भी अध्ययन किया (IAR 1969)।

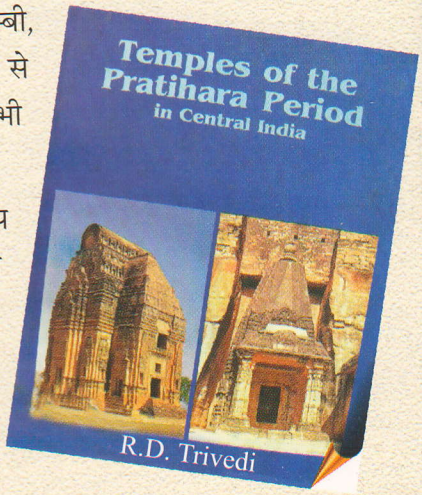

सन् 1977 से 1984 तक का समय प्रतिहारकालीन मन्दिर स्थापत्य कला के अध्ययन की दृष्टि से बहुत ही फलदायक रहा। इस दौरान मन्दिर स्थापत्यकला के एक और विद्वान श्री आर.डी. त्रिवेदी ने मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल के अधीक्षण पुरातत्वविद् के रूप में सात

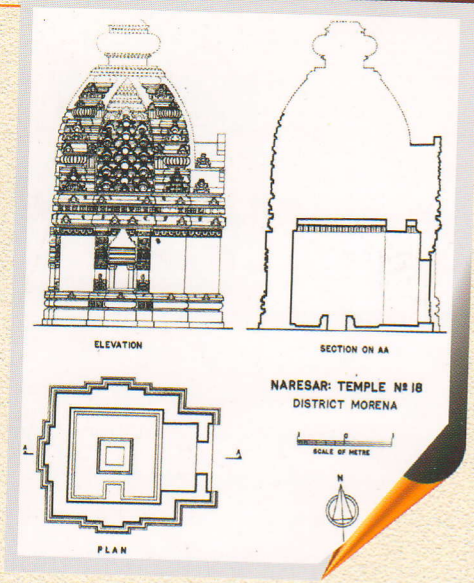

वर्षों तक म.प्र. तथा उ.प्र. में स्थित प्रतिहार कालीन मन्दिरों का गहन अध्ययन किया। इसी कड़ी में उन्होंने म.प्र. स्थित शिवपुरी, मुरैना तथा विदिशा, उ.प्र. स्थित ललितपुर के मन्दिरों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया।

उन्होंने प्रतिहार कालीन मन्दिरों को विकास की दृष्टि से तीन चरणों में विभाजित किया। प्रथम चरण के मन्दिरों को उन्होंने 725-800 शताब्दी के मध्य रखा है। इनमें मुरैना जिले के नरेसर और बटेसर मन्दिरों को शिवपुरी जिले में स्थित महुआ के मन्दिरों को रखा गया। द्वितीय चरण के मन्दिरों का 800-850 ई. तक के मध्य प्रतिस्थापित किया है, जिनमें देवगढ़ (उ.प्र.) स्थित शान्तिनाथ, ललितपुर (उ.प्र.) स्थित कुरैयाबीर मन्दिर, शिवपुरी (म.प्र.) स्थित केलधार, टीकमगढ़ स्थित उमरी सूर्य मन्दिर (म.प्र.) में रखा जा सकता है। अंतिम चरण (तृतीय चरण) के मन्दिरों को 850-950 ई. के मध्य रखा गया है, जिनमें महुआ स्थित चामुण्डा मन्दिर, तेरही स्थित शिव मन्दिर, नचना-कुठार स्थित चतुर्भुज महादेव मन्दिर व विदिशा में कुटकेश्वर मन्दिर है। यह सभी मंदिर म.प्र. में स्थित हैं। उन्होंने अपने सम्पूर्ण कार्य को एक पुस्तक के रूप में 1990 में प्रकाशित किया जिसका शीर्षक है - ***'टेम्पल्स ऑफ दि प्रतिहारा पीरियड इन सेन्ट्रल इंडिया।'***

सन् 1984 से 1993 के मध्य डॉ. बी.एल. नागार्च के निर्देशन में मध्य भारत के कई मन्दिरों का अध्ययन किया गया जिसका निर्माण कार्य नवीं-दसवीं शताब्दी से लेकर बारहवीं शताब्दी के मध्य माना जाता है (IAR 1984-1993)।

तत्पश्चात् डॉ. पीं.के. त्रिवेदी के दिशा-निर्देशन में मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल के दल ने परमार कालीन कला व स्थापत्य के प्रति रूचि प्रगट की तथा उनका यह अध्ययन कार्य सन् 1993-1998 तक चला। डॉ. पी.के. त्रिवेदी को 1995 में वागड़ क्षेत्र के परामार कालीन मन्दिरों पर एक विस्तृत पुस्तक लिखने का भी

श्रेय प्राप्त है। इस पुस्तक का शीर्षक है- *'आर्ट ट्रेडीशन ऑफ दि परमाराज ऑफ वागढ़।'*

मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल की अध्ययन परम्परा को सन् 1998 से 2009 तक नियमित रूप से श्री के.के. राममूर्ति, डॉ. डी. भैंगरा, डॉ. पी.के. मिश्रा, श्री के.के. मोहम्मद, डॉ. नारायण व्यास तथा डॉ. एस.वी. वैंकटेशय्या ने आगे बढ़ाया। इस कड़ी में श्री के.के. राममूर्ति ने भुवनेश्वर के मन्दिरों (IAR1998-99) का अध्ययन किया तथा साथ-साथ म.प्र. स्थित पवैया, खजुराहो, कारसुंआ, डिहवारा तथा भिलसा के मन्दिरों का भी (IAR 1999-2000, 2000-01) अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने छत्तीसगढ़ के भी कुछ मन्दिरों पर अध्ययन कार्य किया। डॉ. पी.के. मिश्रा ने मिथिला क्षेत्र (बिहार) के मन्दिरों की स्थापत्य व मूर्ति कला का अध्ययन किया तथा डॉ. नारायण व्यास ने अपने कार्यकाल में बेसनगर, साँची तथा सतधारा के उत्खननों पर हिन्दी में आख्याओं का सृजन किया।

शिव मंन्दिर, सीतामढ़ी, थोबन, अशोकनगर, म.प्र.

सन् 2009 से 2011-12 तक मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल के दल ने अधीक्षण पुरातत्वविद् डॉ. के. लुर्दूसामी के कुशल दिशा निर्देशन में कच्छपघात कालीन मन्दिरों का विस्तृत अध्ययन किया। वर्ष 2009-10, 2010-11 व 2011-12 की परियोजनाओं के अन्तर्गत जिला अशोक नगर स्थित कदवाहा के मन्दिरों, थोबन ग्राम में स्थित गरगज, सीतामढ़ी, कुटी क्षेत्र, कुटी विस्तार क्षेत्र के मन्दिरों, शिवपुरी जिले में सरवाया गढ़ी के मन्दिरों, तेरही, महुआ के मन्दिरों, विदिशा स्थित ग्यारसपुर के मन्दिरों, मुरैना स्थित ककनमड, बटेसर, मितावली, पदावली के मन्दिरों का तथा ग्वालियर स्थित सास बहु मन्दिरों का विस्तृत अध्ययन उनके डिजिटल फोटोग्राफ व ऑटोकेड - रेखाचित्रों के साथ किया। वर्ष 2012-13 की परियोजना के अंतर्गत डॉ. के. लुर्दूसामी के ही दिशा निर्देशन में पूर्वी विदर्भ क्षेत्र के मन्दिरों का अध्ययन किया जा रहा है।

मन्दिर के मण्डप, थोबन, अशोकनगर, म.प्र.

प्रकाशन

कलश पत्रिका

वर्ष 2008 से मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.प्र.), भोपाल कार्यालय '**कलश**' नामक पत्रिका का प्रकाशन नियमित रूप से कर रहा है। इस पत्रिका का मौलिक उद्देश्य मन्दिरों के स्थापत्य व मूर्ति कला से सम्बन्धित नवीन शोधों व जानकारियों को प्रकाशित वरना है। यह पत्रिका शोधार्थियों को उनके द्वारा मन्दिर व मूर्ति कला पर की गई नई खोजों को आम जन तक पहुँचाने हेतु एक अवसर भी प्रदान करती है। पिछले वर्ष तक इस पत्रिका का प्रकाशन श्याम-श्वेत रंग में होता था परन्तु इस वर्ष से इसका रंगीन प्रकाशन किया जा रहा है।

पुस्तिकाएँ :

1. टेम्पल्स ऑफ मिथिला, 2006 (अंग्रेजी)
2. कच्छपघात मन्दिर कदवाहा, जिला- अशोकनगर, म.प्र., 2010 (अंग्रेजी व हिन्दी)।
3. कच्छपघात कालीन जल-व्यवस्था (कदवाहा, थोबन, जिला-अशोक नगर तथा सुरवाया गढ़ी, रन्नौद, जिला-शिवपुरी के सन्दर्भ में, 2011) (अंग्रेजी व हिन्दी)
4. टेम्पल्स ऑफ कदवाहा, 2012 (अंग्रेजी)।
5. प्रोफाइल टेम्पल सर्वे प्रोजेक्ट (एन.आर.), भोपाल, 2012 (अंग्रेजी)।
6. टेम्पल्स ऑफ थोबन, 2012 (अंग्रेजी)।

जनचेतना कार्यक्रम

अपने नियमित परियोजना कार्यक्रम के अतिरिक्त विभिन्न अवसरों पर मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उत्तर क्षेत्र), भोपाल कार्यालय अपने स्मारकों व राष्ट्रीय धरोहरों के प्रति जनजागरण अभिमान के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रम आयोजित करता आ रहा है।

कार्यशाला

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की 150वीं वर्षगाँठ के अवसर पर हाल ही में इस कार्यालय द्वारा चन्देरी संग्रहालय में कच्छपघातकालीन मन्दिर स्थापत्य व मूर्तिकला पर एक कार्यशाला आयोजित की गई।

मन्दिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल की वर्तमान टीम

परियोजना निदेशक : डॉ. के. लुर्दूसामी (अधीक्षण पुरातत्वविद्)

टीम के सदस्य :
डॉ. एम.सी. जोशी (सहायक पुरातत्वविद्)
श्री अल्हाद व्यास (वरिष्ठ छायाकार)
श्री एल.के. भागचन्दानी (मानचित्रकार श्रेणी-प्रथम)
श्री एस.के. श्रीवास्तव (मानचित्रकार श्रेणी-प्रथम)
श्री के.आर. मालवीय (छायाकार श्रेणी-द्वितीय)

प्रशासनिक सहयोग :
श्री संजय अनगरे (मुख्य लिपिक)
श्री पंकज रामचंदानी (निम्न श्रेणी लिपिक)

कच्छपघात कालीन जल संग्रहण पर आधारित पुस्तिका का विमोचन (2011)

कदवाहा मन्दिर पर आधारित पुस्तिका का विमोचन (2012)

मंदिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल द्वारा
भा.पु.स. की 150वीं वर्षगाँठ के आयोजन व अन्य जन चेतना कार्यक्रमों झलकियाँ

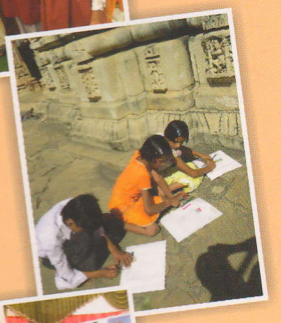

मुखपृष्ठ छायाचित्र :
मण्डप-वितान, मन्दिर संख्या एक
सुरवाया गढ़ी, जिला-शिवपुरी

आलेख - डॉ. के. लुर्दूसामी (अ.पु.वि.), डॉ. एम.सी. जोशी (स.पु.वि.),
डॉ. एस.के. बाजपेयी (पु.अ.)
रेखाचित्र - श्री एल.के. भागचंदानी तथा श्री एस.के. श्रीवास्तव (मानचित्रकार)
छायाचित्र - श्री अल्हाद व्यास और श्री के.आर. मालवीय (छायाकार)
प्रशासनिक सहयोग - श्री संजय अनगरे (मु.लि.), श्री पंकज रामचंदानी (क.लि.)

मंदिर सर्वेक्षण परियोजना (उ.क्षे.), भोपाल
क.न. : 312-सीजीओ काम्पलैक्स, निर्माण सदन, अरेरा हिल्स,
भोपाल (म.प्र.) फोन : 0755-2557360, 2557354
E-mail : tspn.asi@gmail.com
visit our site : www.tspasibhopal.nic.in